# स्वर्गीय पंडित जसराज के भक्ति गीतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा से संगीत विषय में पीएच॰डी॰ की उपाधि हेतु

प्रस्तावित शोध-प्रबंध की

रूपरेखा


शोधार्थिनी

**प्रणाली सिंह**

शोध-निर्देशिका

**प्रो0 लवली शर्मा**

**संगीत विभाग, कला-संकाय**

**दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)**

**दयालबाग, आगरा - 282005**


**2022**

**भूमिका -**

संगीत के अन्तर्गत कई विधायें दृष्टिगोचर होती हैं, जिनमें से भक्ति संगीत भी प्रमुख है। भक्ति शब्द का अर्थ है - ईश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा, सेवा करना, पूजा करना आदि। ईश्वर के प्रति अप्रतिम प्रेम होना ही भक्ति कहलाती है। भक्ति ही एकमात्र ऐसा साधन है जिसके द्वारा मनुष्य को जीवन में शान्ति मिल पाती है। भक्ति शब्द संस्कृत के 'भज्' धातु में 'क्तिन' प्रत्यय के योग से बना है, जिसका अर्थ है - सेवा करना। भक्ति और संगीत एक दूसरे के पूरक हैं इसलिए भक्ति के बिना संगीत सार्थक नहीं है। इनका सम्बन्ध वैदिक संस्कृति में दिखाई पड़ता है। संगीत की उत्पत्ति को शास्त्रों में देवी-देवताओं के द्वारा बताया गया है, इसलिए यह भी कहा जाता है कि संगीत एक प्रकार की दैवीय कला है। संगीत को स्वयं ही आध्यात्मिक माना जाता है और इसका प्रमाण हमारे प्राचीन ग्रन्थों में भी उपलब्ध है, जिसमें 'सामवेद' भक्ति संगीत का ही एक प्राचीन संस्करण है। भक्ति-गीत पवित्र, श्रद्धेय तथा अलौकिक शक्ति से परिपूर्ण गीत होते हैं। भक्ति गीत में 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' का अद्भुत सामंजस्य दृष्टिगोचर होता है।

हमारे भारतीय संगीत में बहुमुखी प्रतिभा के धनी विभिन्न कलाकार हुए हैं, जिन्होंने शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ भक्ति संगीत को भी एक श्रेष्ठ स्थान दिलाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिनमें संगीत मार्तण्ड स्वर्गीय पंडित जसराज का नाम बड़े ही आदर एवं सम्मान के साथ लिया जाता है। पंडित जसराज भारत के प्रसिद्ध एवं सर्वश्रेष्ठ गायको में से एक थे। आपका जन्म 28 जनवरी 1930 को गाँव पीली मंदौरी, हिसार (हरियाणा) में हुआ था। आपने अपने गुरू पण्डित मणीराम, जयवंत सिंह वाघेला, उस्ताद गुलाम कादर खान (मेवाती घराना), स्वामी वल्लभदास (आगरा घराना) से अपनी संगीत की शिक्षा पाई। आपने 16 साल की उम्र में प्रशिक्षण शुरू किया तथा 22 वर्ष की आयु में अपना पहला लाइव संगीत कार्यक्रम किया। आपका सम्बन्ध मेवाती घराने से था। शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में आपके योगदान के लिए आपको कई सम्मानों, पुरस्कारों से नवाज़ा गया जिनमें मुख्य हैं - पद्म विभूषण (2000), पद्म भूषण (1990) और पद्मश्री (1975)। भारतीय शास्त्रीय संगीत में आपका सबसे महत्वपूर्ण और अद्वितीय योगदान शास्त्रीय संगीत को जनता के लिए सरल एवं सहज बनाना था।

आपके द्वारा एक अनोखी जुगलबन्दी का नया प्रयोग हुआ जो मूर्च्छना की प्राचीन शैली पर आधारित है, जिसमें एक महिला और एक पुरूष एक साथ एक ठाठ के दो अलग-अलग रागों की प्रस्तुतियाँ करते हैं। अतः आपके सम्मान में इस जुगलबन्दी का नाम 'जसरंगी' रखा गया। आप पहले भारतीय संगीतज्ञ थे जिनके नाम पर नासा ने एक क्षुद्र ग्रह का नाम पंडित जसराज रखा था। आप कृष्ण और हनुमान जी के परमभक्त थे परन्तु आपकी गायकी में कृष्ण भक्ति की अलौकिकता अधिकायक रूप में दृष्टिगोचर रही है। अतः कृष्ण भक्ति प्रधान भजनों को आपकी गायकी में मुख्य स्थान प्राप्त था। जिनमें खासकर 'ओम् नमोः भगवते वासुदेवाय', 'अच्युतं केशवम्', व कृष्ण स्तुति आदि प्रमुख हैं, जिन्हें आपने शास्त्रीय ढंग से गाकर दुनियाभर में इनकी लोकप्रियता को बढ़ाया। कृष्ण भक्ति की स्तुति 'मधुराष्टकम्' या सूरदास का पद 'रानी तेरो चिर जियो गोपाल' सभी जगह आपका अमूल्य योगदान परिलक्षित होता है। कृष्ण लीला के अद्भुत प्रसंगों के अतिरिक्त आपने हनुमान भक्ति, राम भक्ति, शिव भक्ति, साँईं भक्ति, दुर्गा भक्ति आदि को भी बहुत ही प्रेम भाव तथा जतन से गाया है। आपके आध्यात्मिक गुरू सानंद (गुजरात) के महाराजा जयवंत सिंहजी वाघेला जिन्हें सब बापू साहब कहकर पुकारते थे, ने ही आपको भक्ति गायन के लिए प्रेरित किया। आपकी गायकी इतनी मधुर, स्पष्ट एवं शुद्ध उच्चारण वाली थी कि मानो सुनने वाले के कानों में भी मिश्री घुल जाती थी। आपकी गायकी का यह अंदाज़ मेवाती घराने की ख्याल शैली के विशेष भाव को झलकाता था। आपका गायन सीधे आत्मा को स्पर्श करता है जिसकी व्याख्या शब्दों में करना कठिन प्रतीत होता है।

शोधकर्त्री गायन विषय की छात्रा है तथा पंडित जसराज द्वारा गाए गए भक्ति गीतों को सुनकर उनसे अत्यधिक प्रभावित है और उनके गाये हुए भक्ति गीतों के सन्दर्भ में और अधिक जानने की इच्छुक है। अतः इस विषय में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से तत् सम्बन्धी साहित्य का अवलोकन किया जिसका विवरण निम्नवत् है -

**सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण -**

**पुस्तकें -**

1. हमारे संगीत रत्न : गर्ग, लक्ष्मी नारायण; संगीत कार्यालय, हाथरस 1984
2. संगीत संजीवनी : सिंह, लावण्या कीर्ति, 'काव्या' कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली 2018
3. प्राचीन भारतीय संस्कृति कला, राजनीति, धर्म तथा दर्शनः प्रसाद, डॉ0 ईश्वरी व शर्मा शैलेन्द्र, मीनू पब्लिकेशन्स इलाहाबाद 1980
4. भक्ति तत्व : जपानंद, स्वामी, एजूकेशनल प्रेस बीकानेर 1955
5. संगीत सागर : गर्ग, प्रभुलाल, संगीत कार्यालय, हाथरस 1956
6. चैतन्य सम्प्रदाय और संगीत : सैम्भी, नीलम, प्रिंटवेल प्रकाशन, तिलक नगर, जयपुर 1994
7. भक्ति संगीत : शर्मा, अमल दास, राजकमल प्रकाशन 1990
8. हिन्दी के कृष्ण भक्ति कालीन साहित्य में संगीत : गुप्ता, ऊषा, नव ज्योति प्रेस, लखनऊ 1959

**शोध-प्रबन्ध -**

1. भारतीय संगीत में मध्यकालीन संतों एवं भक्ति कवियों का योगदान : त्रिवेदी शालिनी, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर 1993
2. हिन्दी राम भक्ति काव्य में संगीत तत्व एक समीक्षात्मक अध्ययन विनय पत्रिका के सन्दर्भ में : चौधरी गौरी शंकर, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर 1994
3. शास्त्रीय संगीत की परम्परा को मुगलकालीन कृष्ण भक्ति संगीतकारों की देन : शर्मा रेनू, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर 2000
4. ईसाई भक्ति संगीत में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रयोग उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में : निगम सरिता, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर 2007
5. वर्तमान सामाजिक परिवेश में भक्ति संगीत की उपयोगिता : पॉल नीलम, पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ 2008

6. जीवन के विविध आयामों में संगीत भक्ति शिक्षा मनोरंजन एक अध्ययन : बिसोई सुभाष चन्द्र, वीर बहादुर सिंह, पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ0प्र0 - 2009
7. हिन्दी भक्तिपरक काव्य में निहित सांगीतिक तत्वों का विवेचनात्मक अध्ययन : कृष्ण काव्य के विशिष्ट सन्दर्भ में, गुप्ता गरिमा, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, 2013
8. श्यामा भक्ति संगीत : मुखर्जी, जयश्री वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान 2015
9. Contribution of shri harirayji in the growthof bhakti sangeet : Manhas lalita, Maharaja Sayajirao University of Baroda 2015
10. हिन्दी कृष्ण भक्ति काव्य में संगीत तत्व सूरसागर के विशेष सन्दर्भ में : मनीषा, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।

**पत्रिकाएँ -**

1. संगीत कला विहार, नानल डॉ0 माध्वी, जनवरी 1965
2. संगीत मासिक पत्रिका, गर्ग डॉ0 लक्ष्मी नारायण, जुलाई 2010
3. संगीत मासिक पत्रिका, गर्ग डॉ0 लक्ष्मी नारायण, सितम्बर 2020
4. स्वर सरिता पत्रिका, दिसम्बर 2020

**लेख -**

1. The times of India, 8 July 2009
2. Hindustan times, Mumbai, 10 Dec 2010, 20 June 2011
3. Hindustan times, Delhi, 01 April 2017
4. The Hindu, 5 April 2019
5. The times of India, Mumbai 30 Sep 2019
6. Hindustan times, Delhi, 17 Aug 2020
7. Hindustan times, Delhi, 18 Aug 2020

**Websites -**

1. www.magzter.com
2. www.satyahindi.com
3. Samalochan.blogspot.com
4. M.economictimes.com
5. www.thehindu.com

उपरोक्त सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करने के पश्चात् शोधकर्त्री द्वारा पाया गया कि पं0 जसराज के जीवन परिचय पर प्रकाश डालते हुए क्वचित पठ्नीय सामग्री प्राप्त होती है जैसे स्वर सरिता पत्रिका में संकलित पं0 विजय शंकर मिश्र द्वारा रचित 'रसराज पं0 जसराज का यशराग', हिन्दुस्तान टाइम्स में प्रकाशित सौम्या शर्मा का लेख 'Pt. Jasraj : early life, awards and other achievements of the Padama Vibhushan awardee' व सुप्रिया शर्मा का लेख 'Pt. Jasraj in his life - long love for music' में पं0 जसराज के जीवन व उन्हें प्राप्त सम्मानों का विवरण प्राप्त है किन्तु उनके द्वारा गाए गए भक्ति प्रधान गीतों से सम्बिन्धित कोई पुस्तक व शोध प्रबन्ध प्राप्त नहीं होते।

आश्चर्य है कि पं0 जसराज के भक्ति प्रधान गीतों पर समन्वित पृथक रूप से कोई सामग्री पुस्तक, शोध प्रबन्ध, शोध पत्रों के रूप में प्राप्त नहीं होती तथा किसी प्रकार का लघु शोध प्रबन्ध भी इस विषय पर संचालित नहीं हुआ। अतः शोधार्थिनी द्वारा किया गया कार्य नवीन व मौलिक होगा। अतः 'स्वर्गीय पंडित जसराज के भक्ति गीतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन' इस विषय को पूर्ण रूप से स्पष्ट किया जाएगा।

**समस्या कथन -**

"स्वर्गीय पंडित जसराज के भक्ति गीतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

**समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या -**

- भक्ति

स्त्री. (संज्ञा) मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश के अनुसार - ईश्वर या पूज्य व्यक्ति के प्रति सेवा, अराधना।

राजकमल हिन्दी शब्दकोश के अनुसार - देवी-देवता या ईश्वर के प्रति होने वाला विशेष प्रेम।

- गीत

पु0 (संज्ञा) प्रामाणिक हिन्दी शब्दकोश के अनुसार - वह वाक्य, पद या छन्द जो गाया जाता है।

वि0 (संज्ञा) राजकमल हिन्दी शब्दकोश के अनुसार - गाया हुआ, कथित, वर्णित।

- भक्ति गीत

प्रो0 लवली शर्मा जी के अनुसार - अराध्य की अराधना में प्रयोग किये गये शब्दों को स्वर और ताल में बाँधकर जो बन्दिश तैयार की जाती है उसे भक्ति गीत का नाम दिया जा सकता है।

- विश्लेषणात्मक

वि0 (संज्ञा) (विश्लेषण+आत्मक) (विचार या निश्चय) जो विश्लेषणावली प्रक्रिया के अनुसार हो।

**हिन्दी खोज**

- अध्ययन

किसी विषय के सब अंगों या गूढ़ तत्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे देखने, समझने या पढ़ने की क्रिया। B sarkari.com

राजकमल हिन्दी शब्दकोश के अनुसार - पु- (सं) पढ़ना, पढ़ाई।

**अध्ययन की आवश्यकता -**

इस अध्ययन के द्वारा विशेष रूप से जसराज जी द्वारा गाये गये भक्ति गीतों का ज्ञान प्राप्त होगा जिससे शोधकर्त्री के भक्ति सम्बन्धि ज्ञान में वृद्धि होगी साथ ही जसराज जी द्वारा गाये भक्ति गीतों की स्वरलिपिबद्ध रचना संगीत विद्यार्थी, शोधार्थियों को प्रदान की जाएगी। अतः संगीत विद्यार्थीयों को भी इस अध्ययन का पूर्ण लाभ प्राप्त होगा।

**अध्ययन के उद्देश्य -**

- पंडित जसराज के जीवन परिचय का अध्ययन।

- पंडित जसराज के घराने की शैली एवं भक्ति गीतों के सांगीतिक प्रभाव का अध्ययन।
- पंडित जसराज के भक्ति गीतों का स्वरांकन एवं विशेषताओं का अध्ययन।
- पंडित जसराज के भक्ति प्रधान गीतों में सौंदर्यात्मक तत्वों का अध्ययन।
- पंडित जसराज के कलाकार रूप एवं गाए गए गीतों का संकलन एवं विश्लेषण करना।

**परिसीमांकन -**

शोध कार्य की समय सीमा को ध्यान में रखते हुए स्वर्गीय पं0 जसराज द्वारा गाए गए किन्हीं 25 भक्ति गीतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाएगा व इन्हीं भक्ति गीतों में से 10 भक्ति गीतों का सामान्य अध्ययन, 10 भक्ति गीतों का स्वरांकन तथा 5 भक्ति गीतों को विश्लेषण करने के लिए परिसीमित किया जाएगा।

**अध्ययन की विधि -**

विश्लेषणात्मक विधि, सर्वेक्षणात्मक विधि तथा साक्षात्कर विधि का प्रयोग किया जाएगा।

**अध्ययन के उपकरण -**

दृश्य-श्रव्य सामग्री (कम्प्यूटर, इंटरनेट, लैपटॉप, मोबाइल)

**अध्ययन के स्त्रोत -**

पुस्तकालय, पत्र-पत्रिकाओं तथा गुणीजनों से साक्षात्कार द्वारा।

**अध्यायों का विभाजन -**

- भूमिका
- सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन
- प्रथम अध्याय -

भक्ति संगीत : परिचयात्मक अध्ययन

- द्वितीय अध्याय -

पंडित जसराज का जीवनवृत एवं व्यक्तित्व

- तृतीय अध्याय -

पंडित जसराज का घराना एवं सांगीतिक योगदान

- चतुर्थ अध्याय -

पंडित जसराज द्वारा गाए गए भक्ति गीतों का स्वरांकन

- पंचम अध्याय -

पंडित जसराज द्वारा गाए गए भक्ति गीतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

- उपसंहार
- परिशिष्ट
- संदर्भ ग्रंथ सूची

**अध्ययन के महत्व -**

प्रस्तावित शोध का महत्व विशेष रूप से पं0 जसराज के व्यक्तित्व एवं उनके द्वारा गाए गए भक्ति गीतों को उजागर करने में है। साथ ही साथ पं0 जसराज द्वारा गाए गए भक्ति गीतों का स्वरांकन, उनकी प्रकृति तथा उनमें निहित सौन्दर्य पक्ष व विशेषताएँ जनसाधारण के सम्मुख लाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जिससे समस्त संगीत जगत के विद्यार्थी एवं शोधार्थी लाभान्वित होंगे अतः शोधकर्त्री द्वारा किया जा रहा यह शोधकार्य महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

**संदर्भ ग्रंथ सूची -**

**पुस्तकें -**

- भक्ति तत्व : जपानंद, स्वामी, एजूकेशनल प्रेस बीकानेर 1955
- संगीत सागर : गर्ग, प्रभुलाल, संगीत कार्यालय, हाथरस 1956
- हिन्दी के कृष्ण भक्ति कालीन साहित्य में संगीत : गुप्ता, ऊषा, नव ज्योति प्रेस, लखनऊ 1959

- प्राचीन भारतीय संस्कृति कला, राजनीति, धर्म तथा दर्शन : प्रसाद, डॉ0 ईश्वरी व शर्मा शैलेन्द्र, मीनू पब्लिकेशन्स इलाहाबाद 1980
- हमारे संगीत रत्न : गर्ग, लक्ष्मी नारायण; संगीत कार्यालय, हाथरस 1984
- भक्ति संगीत : शर्मा, अमल दास, राजकमल प्रकाशन 1990
- संगीत में ताल वाद्यों की उपयोगिता : गुप्ता डॉ0 चित्रा, नई दिल्ली, राधा पब्लिकेशन्स, 1992
- चैतन्य सम्प्रदाय और संगीत : सैम्भी, नीलम, प्रिंटवेल प्रकाशन, तिलक नगर, जयपुर 1994
- भारतीय संगीत की परंपरा : वंशानुक्रम एवं वातावरण, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली 2004
- सांगीतिक एवं धार्मिक परंपरा - एक अवलोकन, संजय प्रकाशन, दिल्ली 2006
- वसंत - संगीत विशारद : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ0प्र0), 2007
- संगीत संजीवनी : सिंह, लावण्या कीर्ति, 'काव्या' कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली 2018
- रसराज : पण्डित जसराज, बुद्धिराजा, सुनिता वाणी प्रकाशन 2018

**शोध-प्रबन्ध -**

- भारतीय संगीत में मध्यकालीन संतों एवं भक्ति कवियों का योगदान : त्रिवेदी शालिनी, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर 1993
- हिन्दी राम भक्ति काव्य में संगीत तत्व एक समीक्षात्मक अध्ययन विनय पत्रिका के सन्दर्भ में : चौधरी गौरी शंकर, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर 1994
- शास्त्रीय संगीत की परम्परा को मुगलकालीन कृष्ण भक्ति संगीतकारों की देन : शर्मा रेनू, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर 2000
- ईसाई भक्ति संगीत में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रयोग उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में : निगम सरिता, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर 2007

- वर्तमान सामाजिक परिवेश में भक्ति संगीत की उपयोगिता : पॉल नीलम, पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ 2008
- जीवन के विविध आयामों में संगीत भक्ति शिक्षा मनोरंजन एक अध्ययन : बिसोई सुभाष चन्द्र, वीर बहादुर सिंह, पूर्वांन्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ0प्र0 - 2009
- हिन्दी भक्तिपरक काव्य में निहित सांगीतिक तत्वों का विवेचनात्मक अध्ययन : कृष्ण काव्य के विशिष्ट सन्दर्भ में, गुप्ता गरिमा, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, 2013
- श्यामा भक्ति संगीत : मुखर्जी, जयश्री वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान 2015
- Contribution of shri harirayji in the growth of bhakti sangeet : Manhas lalita, Maharaja Sayajirao University of Baroda 2015
- हिन्दी कृष्ण भक्ति काव्य में संगीत तत्व सूरसागर के विशेष सन्दर्भ में : मनीषा, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।


**पत्रिकाएँ -**


- संगीत कला विहार, नानल डॉ0 माध्वी, जनवरी 1965
- संगीत मासिक पत्रिका, गर्ग डॉ0 लक्ष्मी नारायण, जुलाई 2010
- संगीत मासिक पत्रिका, गर्ग डॉ0 लक्ष्मी नारायण, सितम्बर 2020
- स्वर सरिता पत्रिका, दिसम्बर 2020


**लेख -**


- The times of India, 8 july 2009
- Hindustan times, Mumbai, 10 Dec 2010, 20 june 2011
- Hindustan times, Delhi, 01 April 2017
- The Hindu, 5 April 2019
- The times of India, Mumbai 30 Sep 2019

- Hindustan times, Delhi, 17 Aug 2020
- Hindustan times, Delhi, 18 Aug 2020

**Websites -**

- www.magzter.com
- www.satyahindi.com
- Samalochan.blogspot.com
- M.economictimes.com
- www.thehindu.com
- hi.m.wikipedia.Org
- hindi.starsunfolded.com
- www.bbc.com

**प्रश्नावली -**

1. भक्ति शब्द से क्या तात्पर्य है?
2. भक्ति शब्द की उत्पत्ति किस प्रकार हुई?
3. भक्ति में संगीत से क्या तात्पर्य है?
4. क्या भक्ति और संगीत में कोई सम्बन्ध है?
5. क्या भक्ति और संगीत एक दूसरे के पूरक है?
6. क्या भक्ति गीतों से मानव के ऊपर कोई प्रभाव पड़ता है?
7. क्या भक्ति संगीत जीवन के लिए आवश्यक है?
8. पंडित जसराज जी के भक्ति गीतों में किस प्रकार की विशेषताऐं देखने को मिलती हैं?
9. पंडित जसराज जी के भक्ति गीतों में सौन्दर्य पक्ष किस प्रकार बताया गया है?
10. पंडित जसराज जी के भक्ति गीतों की प्रकृति कैसी है?
11. भक्ति गीतों में रागों का कितना प्रयोग होता है?

12. भक्ति गीतों में मुख्यतः कौन सी तालें प्रयुक्त होती है?